यूनिवर्सिटी ऑफ हार्ड रॉक्स ऑफ लाइफ

नंद किशोर चौधरी
के जीवन पर आधारित

प्यार, सरलता और दृढ़ संकल्प की कहानी में आपका स्वागत है।
कहानी, जीवन के कठोर चट्टानों के विश्वविद्यालय की ...

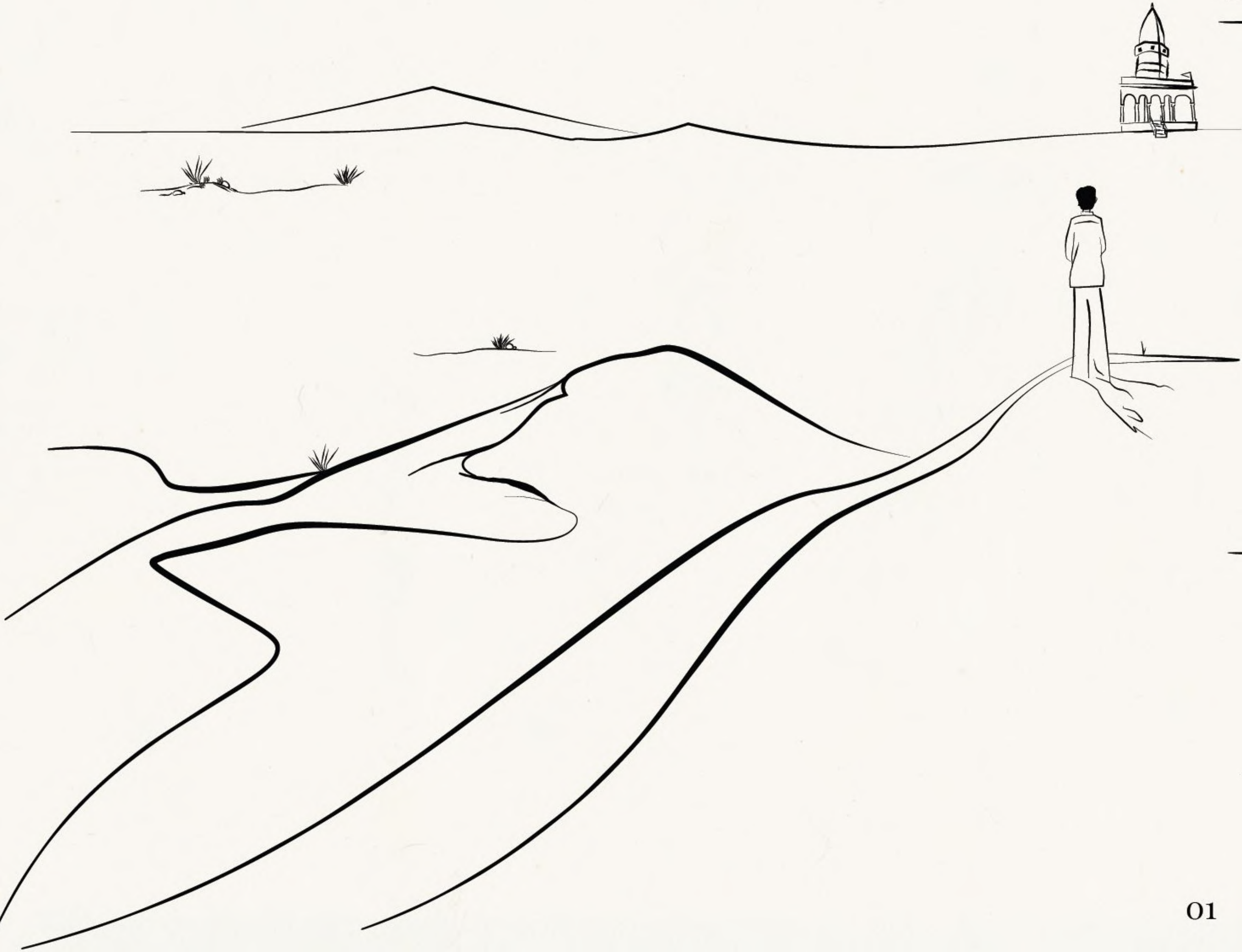

1970 के दशक की बात है जब, एक युवा ने अपने पिता की दुकान पर काम करके अपने जीवन की यात्रा की शुरुवात की, लेकिन कुछ ही समय में काम छोड़ दिया। यहां तक कि उन्होंने एक बैंक में नौकरी का प्रस्ताव भी ठुकरा दिया। इस युवा का नाम है नंद किशोर चौधरी।

नंद ने एक नए सिरे से बदलाव लाना चाहा, नहीं पता था क्या और कैसे लेकिन फिर भी जवाब की तलाश में उन्होंने अपने परिवार और पड़ोसियों के साथ अपनी बात को रखा और यहीं, छोटे से शहर चूरु से एक ऐसे सपने की शुरुआत हुई जो दुनिया में एक मिसाल कायम किये हुए है।

समय के साथ, नंद एक अंतर्मुखी लेकिन एक उत्साही पाठक और प्रकृति प्रेमी बनते गए। उन्होंने टैगोर, गांधी के कार्यों और रामायण-भगवद गीता के आध्यात्मिक ग्रंथों का भी अध्ययन किया और ऐसे ही नंद किशोर ने अपनी विरासत की खोज की जिसमे उन्होंने अपने मूल्यों को पहचानने और अपने जीवन-उद्देश्य के खोज में अपनी यात्रा का शुभारम्भ किया।

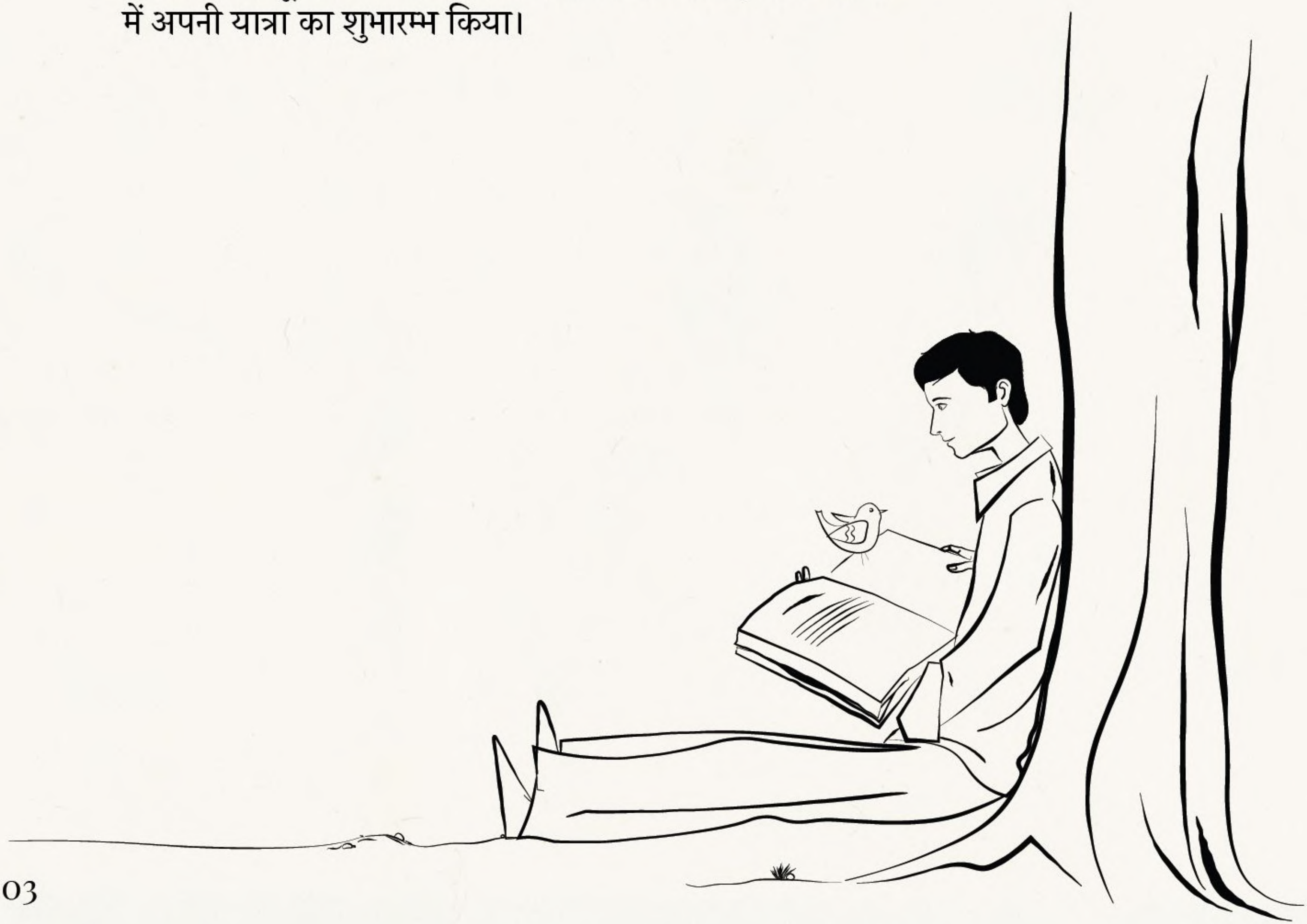

कुछ समय बाद ही, नंद की एक ब्रिटिश डिजाइनर और शोधकर्ता इले कूपर से मुलाकात हुई, जो शेखावाटी के दीवार के चित्रों का अध्ययन करने के लिए राजस्थान आए थे। नंद और इले की दोस्ती हुई और इस दोस्त ने ही नंद को पुनर्जीवित और प्रेरित किया। कुछ अलग, नयी पहल की शुरुवात करने के लिए, यानि गलीचे की दुनिया में कदम रखने लिए।

जब पहली शुरुवात के लिए कुछ बीज बोये गए ...
इले की सलाह से, नंद किशोर ने कालीन बुनाई के काम कि दुनिया में कदम रखा। उन्होंने अपने पिता से 5000 रुपए उधार के तौर पर लिए जिससे एक साइकिल, कुछ कच्चा माल खरीदा और राजस्थान के छोटे से गांव चूरू से नौ कारीगरों, दो लूम के साथ अपने काम को शुरु किया।
एक सपना जो अब में सच तब्दील हो रहा था!

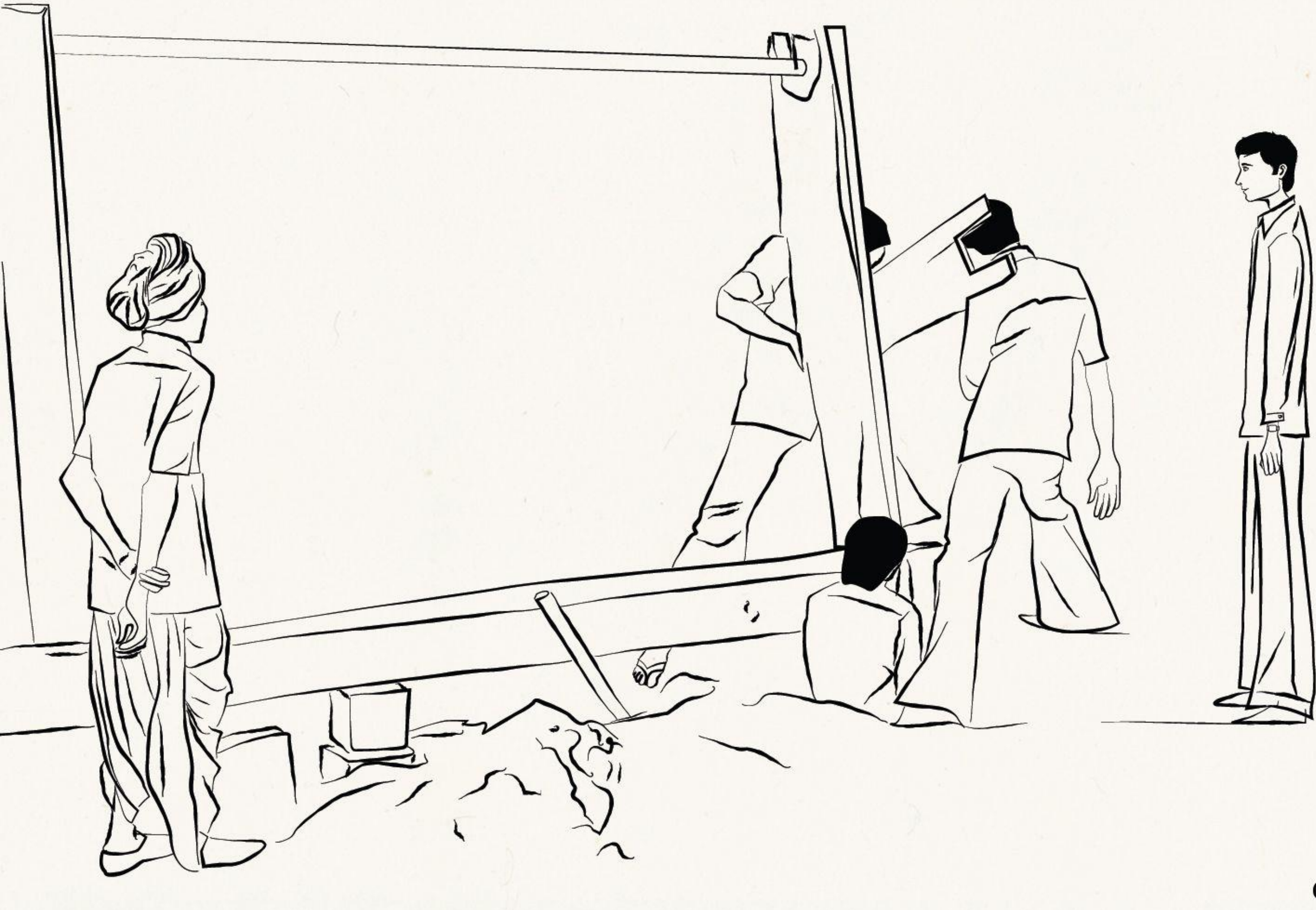

समाज के बनाये कुरीतियों से जंग...
शुरुवात तो हो गयी, नींव भी पड़ गयी थी लेकिन चुनौतियां सामने खड़ी थीं। ये वो पहली बाधा थी जिसने छुवाछुत के कुरीतियों से लड़ने के लिए नंद को अग्रसर किया। उस समय में मौजूद कारीगरों को निचले समुदाय का माना जाता था। लेकिन नंद हमेशा सभी के साथ सम्मान और प्रेम के साथ व्यवहार करने में विश्वास रखते थे और उनकी इसी सोच ने उनके सभी फैसलों का मार्गदर्शन किया। विश्वास से अधिक, उन्होंने जाति व्यवस्था को कभी नहीं समझा। वह कहते हैं, "एक इंसान का परिचय उसके काम से होना चाहिए, न कि किसी और तथ्य से।"

नतीजतन, नंद किशोर को ये एहसास होने लगा की, "मुझे परिवार ने खारिज कर दिया है, कोई भी उनपर भरोसा नहीं कर रहा था।
दूसरी तरफ उनके कारीगरों को समाज ने नकार दिया था। और यहां फिर दो ऐसे लोग एक साथ आए जिन्हे एक दूसरे में प्यार मिला। जो समाज से निष्काषित किये जा चुके थे और इस तरह प्यार और विश्वाश की बुनियाद से जयपुर रग्स का गठन हुआ।

दिन-प्रतिदिन काम जारी रहा, नंद किशोर और उनके साथी कारीगरों ने बेनेरस के एक उस्ताद से बुनाई की कला सीखी।
परिश्रम और जुनून के साथ अपने पहले गलीचे का निर्माण किया। जो 6*4 वर्ग फुट के दो गलीचे थे और इन्हे 'भारत कालीन उद्यम' के नाम से निर्यात किया गया था।'

नंद का सपना साकार होने लगा था। केवल दो वर्षों में, वह राजस्थान के गांवों में 10 करघे(लूम) स्थापित करने में सफल रहें।

कुछ वर्षों के बाद, नंद को गुजरात में एक आदिवासी समुदाय के बारे में पता चला और उन्होंने अपने व्यवसाय का विस्तार करने के बारे में सोचा। लोगों ने इस विचार का विरोध किया कि समुदाय घृणास्पद है, वो मदद के लिए तैयार नहीं होंगे।

अब ऐसे में नंद उलझन में आगये और फिर उन्होंने अपने दोस्त से सलाह लिया।

आइले ने समझाया कि यह समुदाय निर्दोष है, इनका सालों से शोषण किया जा रहा है। 'हमारे आस-पास सभी को जरूरत है प्यार और करुणा की और शायद इस समाज को भी'

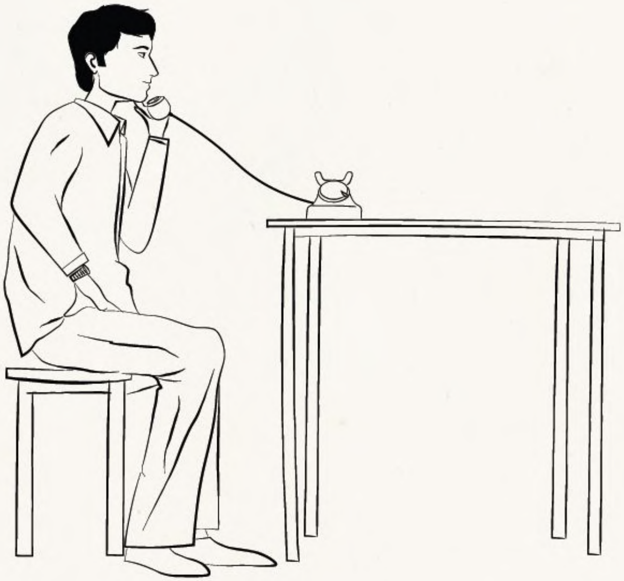

तीन साल के अंदर-अंदर चमत्कार सा हुआ। उनका प्रतिरोध प्यार में बदल गया और वे नंद को 'भाईसाहब' के रूप में संबोधित करने लगे।

इस सब के बीच, एक दिन राजनीतिक रूप से एक रौबदार ठेकेदार नंद के कार्यालय में आ पंहुचा, उसने अपनी बंदूक दिखा कर इशारा किया। नंद जानते थे कि यह उसकी विफलता की हताशा मात्र थी क्योंकि नंद उस जैसे बिचौलियों को व्यापर से दूर कर रहे थे और इस वजह से ठेकेदारों के लाभ कम हो गए थे।

अब नंद का सपना धीरे-धीरे अस्तित्व की और बढ़ रहा था ...

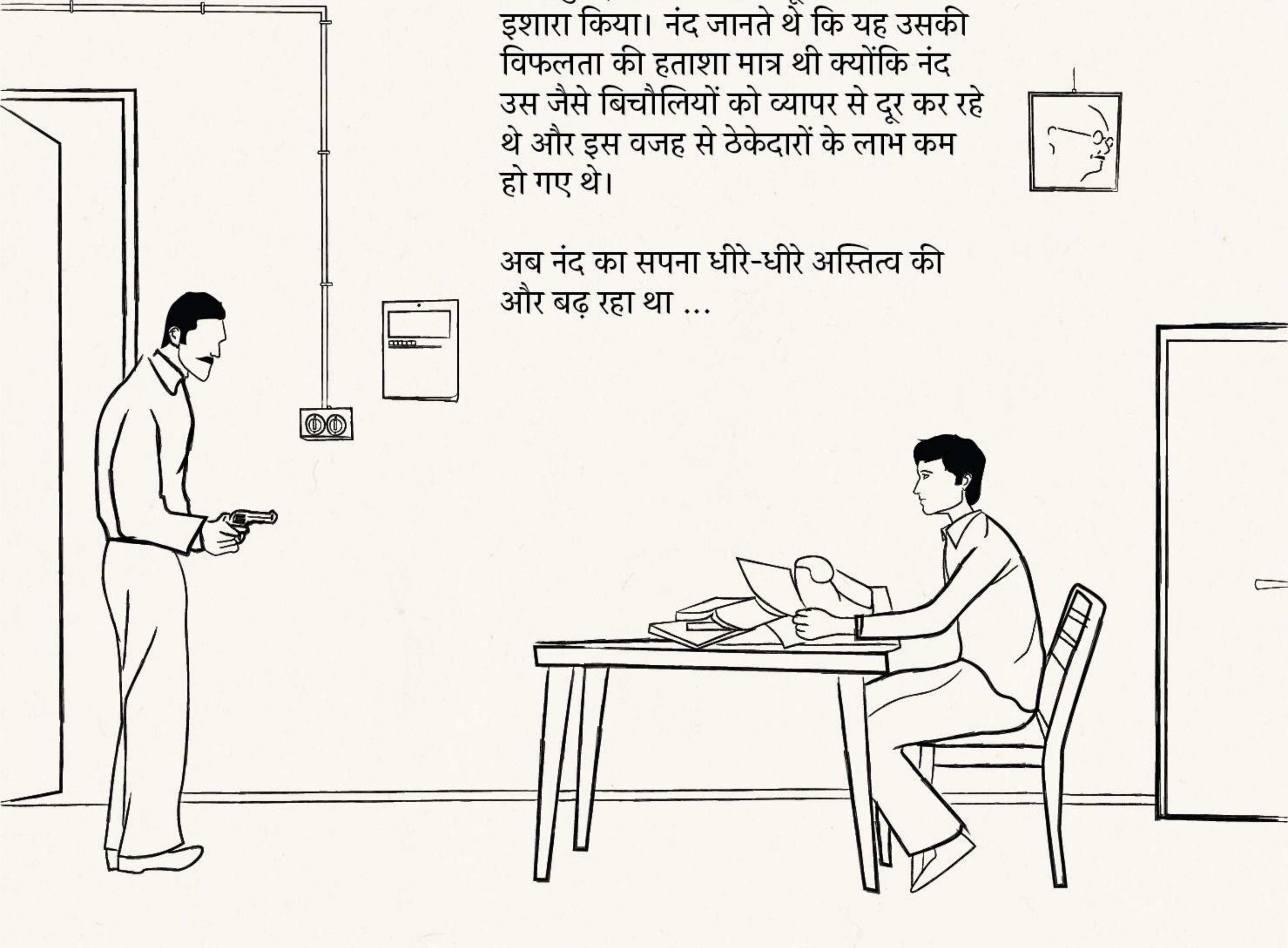

व्यक्तिगत तौर पर, नंद को तीन बेटियों और दो बेटों के होने का सुख प्राप्त था। जब नंद अपनी खुशियों में मशगूल थे, तब समाज की अन्य योजनाएं बन रही थीं...

नंद की पत्नी सुलोचना दुखी थी। उन्होंने कहा, तीन बेटियों को जन्म देने के बाद लोग मुझे हिन् भावना से देखते हैं।

यह सुनकर, नंद परेशान थे और अपनी इस परेशानी के हल के लिए फिर एक बार वह अपने दोस्त आइले के पास पहुचें।

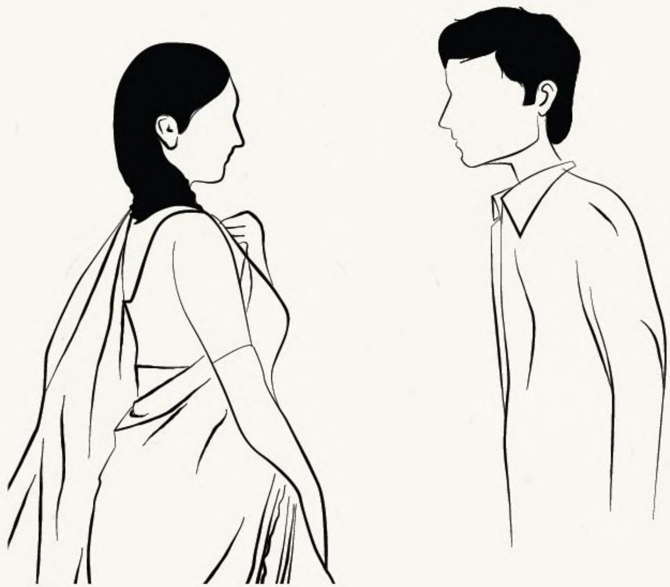

आइले ने कहा, ‘आपकी संस्कृति में लोग लड़कियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते हैं और यह सही भी नहीं है। लेकिन आपको यह समझने की आवश्यकता है कि लड़कियां लड़कों की तुलना में अधिक कुशल और बेहतर इंसान हैं साथ ही साथ बेहतर नेता भी हैं।’

नंद,
कड़े विरोध का सामना करने के बाद भी अपने बच्चों के साथ एक जैसा व्यवहार करने का फैसला किया और सुनिश्चित किया कि सभी को समान शिक्षा मिले।

*और आखिरकार, उन्होंने अपनी सभी बेटियों को अमेरिका में पढ़ने के लिए भेजा जो अपने आप में एक साहसिक कदम था।

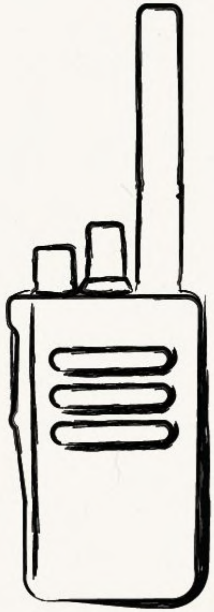

इस बीच, गुजरात में नंद का कारोबार फल-फूल रहा था। हालांकि, कारीगरों की बढ़ती संख्या के साथ उनके लिए कठिन इलाकों और जगह में कोई संचार चैनल नहीं होने के कारण उनके साथ जुड़ना एक कठिन समस्या हो गयी थी। इसलिए, नंद ने वॉकी-टॉकी का उपयोग करने के बारे में सोचा।

इस दौरान, नंद ने महसूस किया कि महिलाएं अधिक ईमानदार हैं, पुरुषों की तुलना में बेहतर प्रबंधन क्षमता रखती हैं। इसलिए उन्होंने अंततः यह फैसला किया कि वह महिलाओं को अधिक अवसर देंगे।

जयपुर की ओर वापसी...

1990 के दशक में दुर्भाग्यपूर्ण कारणों से नंद अपने भाई से अलग हो गए और फिर वह शून्य पर रह गए। वह विषम परिस्थितियों से घिरे हुए थे, लेकिन तब भी वह दृढ़ थे...

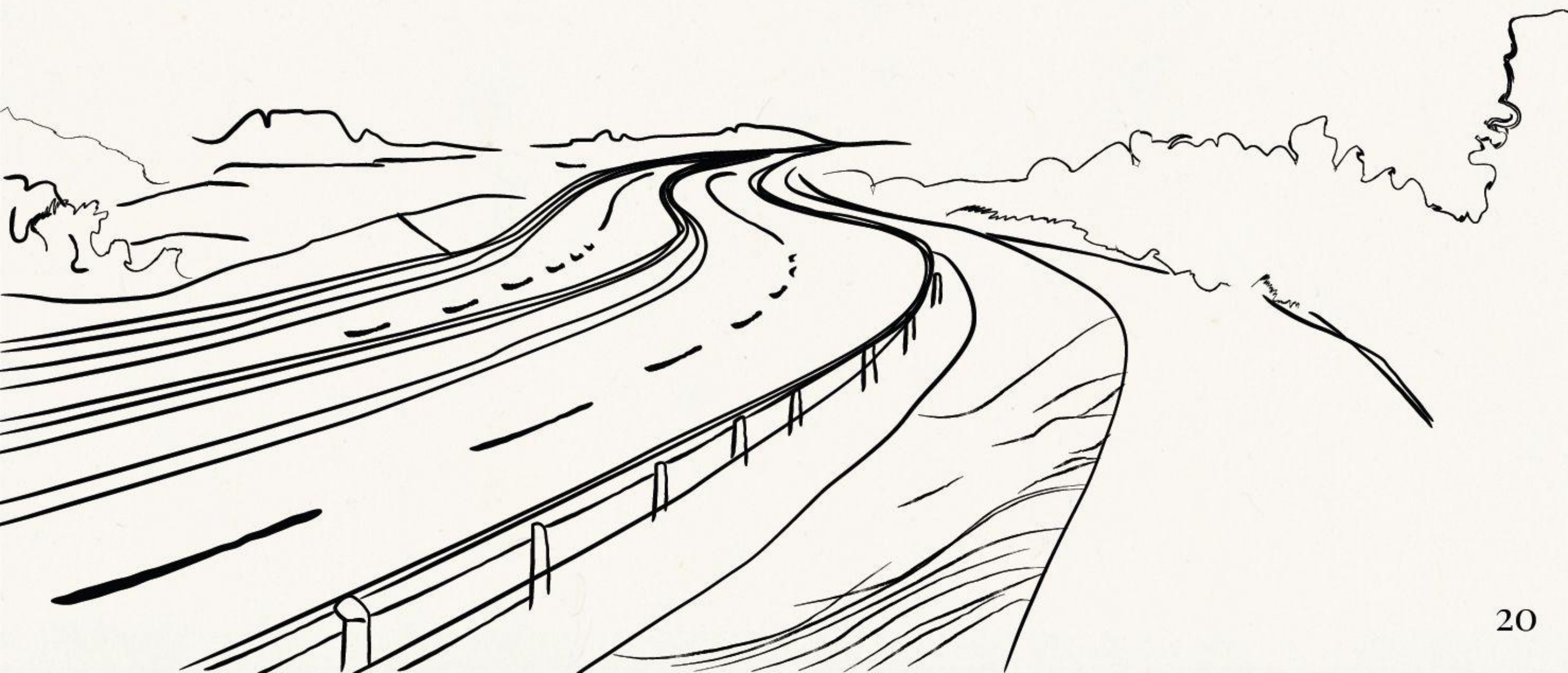

जयपुर में मुख्य कार्यालय स्थापित किया गया, जिसका उद्देश्य वैश्विक स्तर पर जाना था।

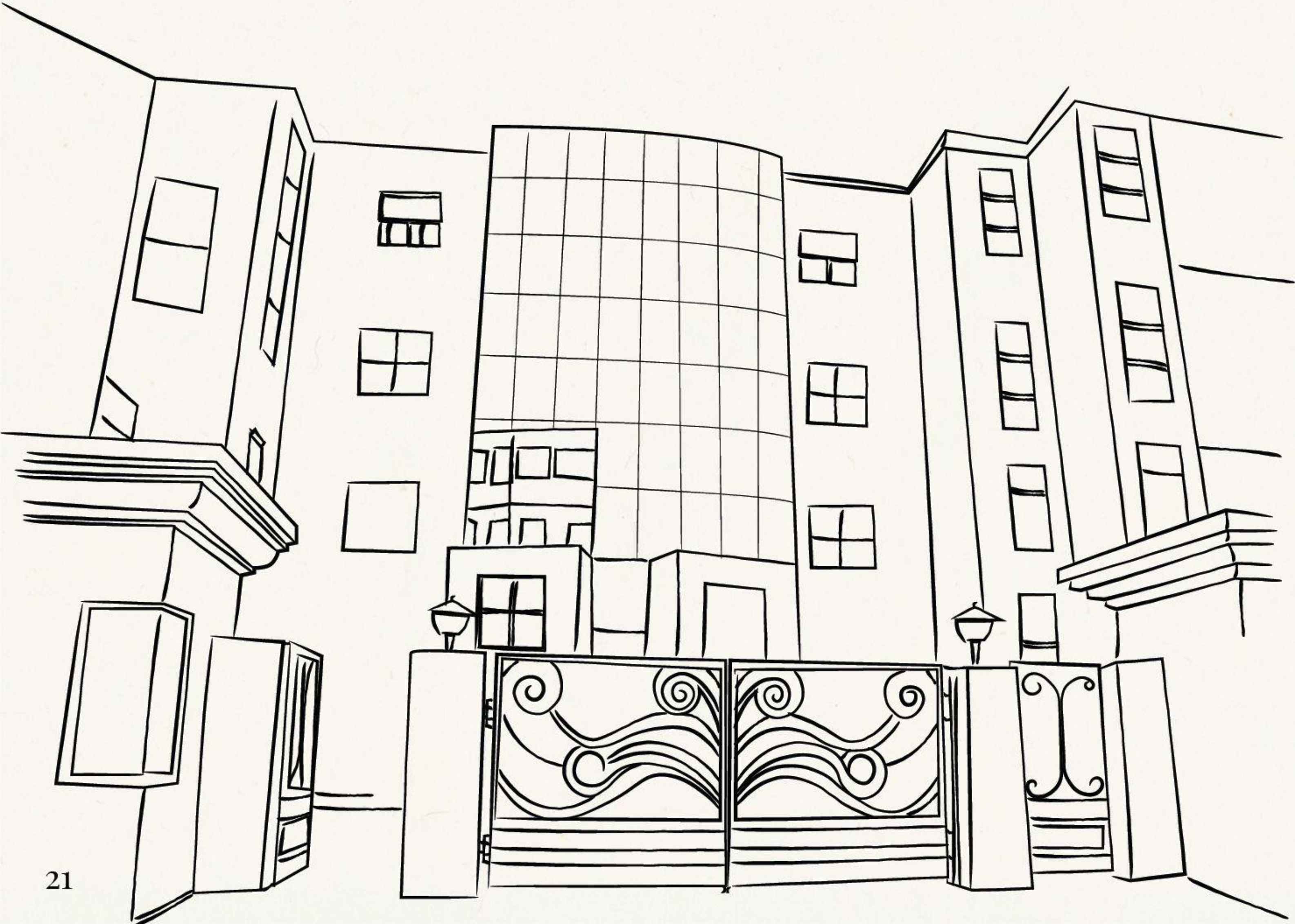

समय आगया था वैश्विक स्तर पर जाने का, लेकिन कैसे?

वैश्विक महत्वाकांक्षाओं के साथ, बड़ी चुनौतियां आईं! नंद ने अब तक केवल बुनकरों के साथ काम किया था। पिछले कुछ वर्षों में जीवन के ऊबड़-खाबड़ रास्तों में चले तो थे लेकिन, अब यह जानने की आवश्यकता थी कि वह ऐसा क्या करें जो उन्होंने पिछले 20 वर्षों में नहीं किया।

नंद ने महसूस किया कि यह एक कठिन समय था। उन्हें यह समझ आया कि निर्णय लेने में उनकी भूमिका हर जगह है, जो नेतृत्व के लिए और कंपनी के विकास में प्रतिबंधित करता है और बाधक का रूप है।

नंद ने आत्मनिरीक्षण करना शुरु किया, वैश्विक रणनीतियों को सीखना और पेशेवरों को काम पर रखने के लिए उन्हें बेहतर समर्थन देना। उन्होंने बहुत सारे साक्षात्कार आयोजित किए लेकिन आखिरकार उन्होंने महसूस किया कि सभी उन्हें उनके मार्ग से दूर कर रहे हैं।

नंद ने सोचा कि क्या किया जा सकता है? उन्होंने महसूस किया कि ज्ञान शक्ति है, लेकिन अभ्यास के बिना ज्ञान अहंकार में विकसित होता है। फिर उन्होंने यह तय किया कि खुदके साथ-साथ पेशेवरों को भी जमीनी स्तर से जोड़ा जाए।

ऐसा करने के लिए, वह 'खुद को खोने के माध्यम से खुद को पाने' के विचार के साथ एक नए पड़ाव की ओर आये और हायर स्कूल ऑफ अनलर्निंग की स्थापना की, जिसमे शर्त ये थी की प्रत्येक पेशेवर, व्यवसाय के मूल सिद्धांतों को समझने के लिए अशिक्षित प्रबंधकों के साथ काम करेंगे।

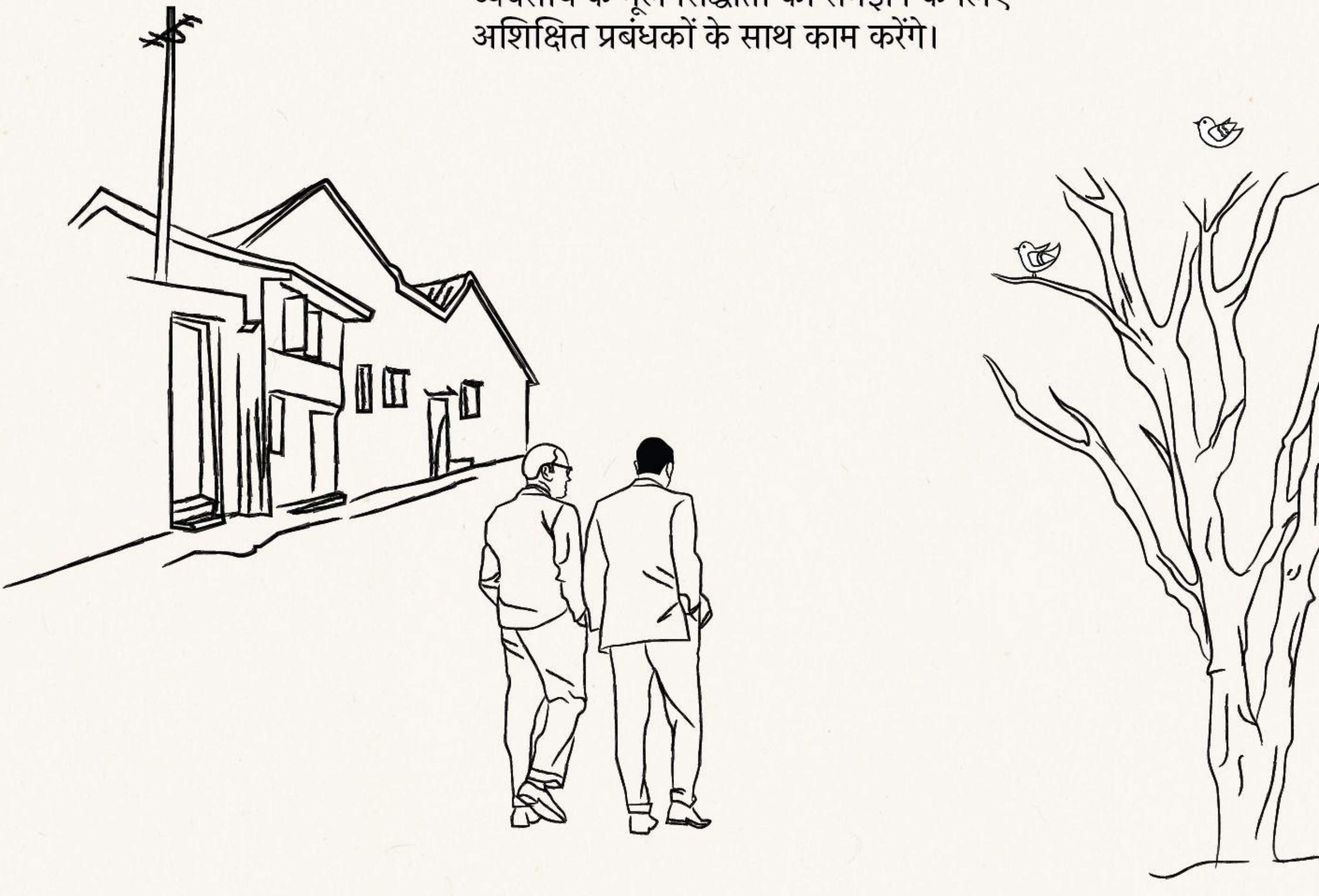

नंद केवल व्यवसाय के बारे में ही नहीं, बल्कि अपने कारीगरों के बारे में भी चिंतित थे। वे मानते थे कि अगर उनके कारीगर खुश होंगे तो उनका योगदान भी बेहतर होगा। इसलिए, उन्होंने जमीनी स्तर पर मानवता का संबंध विकसित करने के लिए **जयपुर रग्स फाउंडेशन** की स्थापना की।

साल 2008 में, यह जानते हुए कि दुनिया भर में उनकी सरलता की व्यापक रूप से सराहना की जा रही है, उन्हें तत्कालीन प्रसिद्ध प्रबंधन प्रोफेसर सी.के प्रहलाद का फोन आया। अब! नंद को अपने कानों पर यकीन ही नहीं हुआ जब उन्होंने सुना कि सी.के प्रहलाद जयपुर रग्स के बिजनेस मॉडल पर केस स्टडी करना चाहतें हैं।

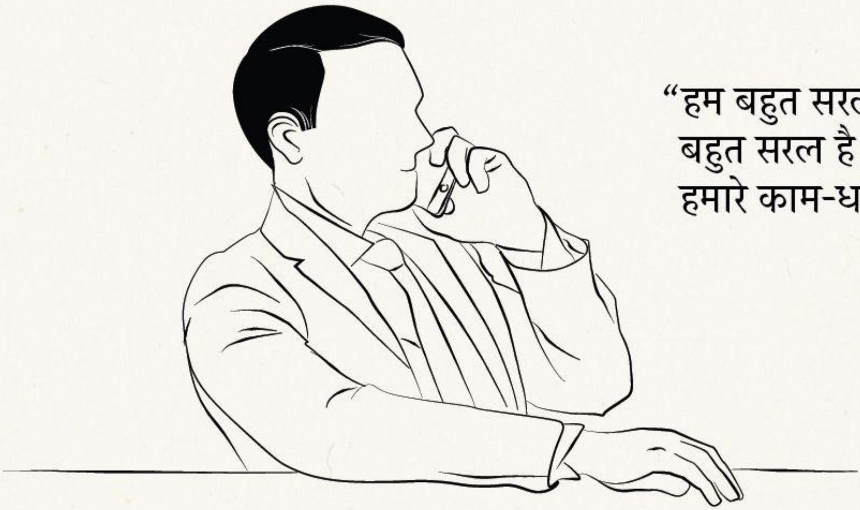

"हम बहुत सरल लोग हैं, हम जो करते हैं वह बहुत सरल है। हम आपको पसंद करेंगे लेकिन हमारे काम-धाम का अध्ययन कौन करना चाहेगा?"

"नंद आपने जो किया वह बहुत बड़ी बात और काबिले तारीफ है। जमीनी स्तर पर रचनात्मक क्षमता को बढ़ाकर आपने सबसे अमीर को सबसे गरीब से जोड़ा है।"

महत्वपूर्ण खोज...

पुस्तक, **'द फॉर्च्यून एट द बॉटम ऑफ द पिरामिड'** प्रकाशित हुई। जिसने अंतरराष्ट्रीय बाजार में जयपुर रग्स के इतिहास को बदल दिया। नंद को दुनिया भर से कॉल आने लगे। वैश्विक स्तर पर, कंपनी का नाम आसमान छू रहा था। एक नया अध्याय शुरू हुआ था! यह उनके सपने की तरफ एक विशाल छलांग थी।

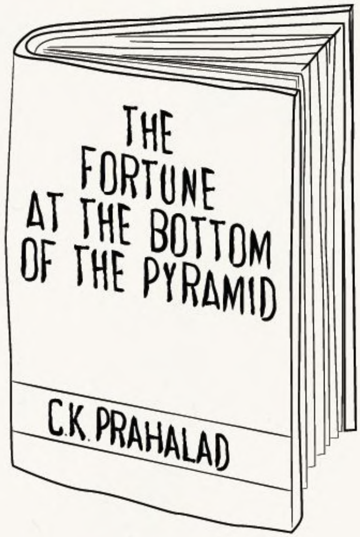

पुस्तक ने नंद को अर्न्स्ट एंड यंग, एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर अवार्ड और जयपुर रग्स को वैश्विक नाम दिया।

साल 2012 की शुरुआत में, जयपुर रग्स ने एक प्रयोग किया। इस प्रयोग में जिसमें तीन बुनकर थे जो कभी एक-दूसरे के नहीं मिले थे जिनकी रचना ने इस प्रक्रिया मे रचनात्मक विस्फोट लाया था। नंद की बेटी कविता ने इसे प्रोजेक्ट का नाम ‘त्रुटि’ दिया, जो प्रकृति में अंतर की सराहना करते हुए सद्भाव का प्रतीक बन गया।

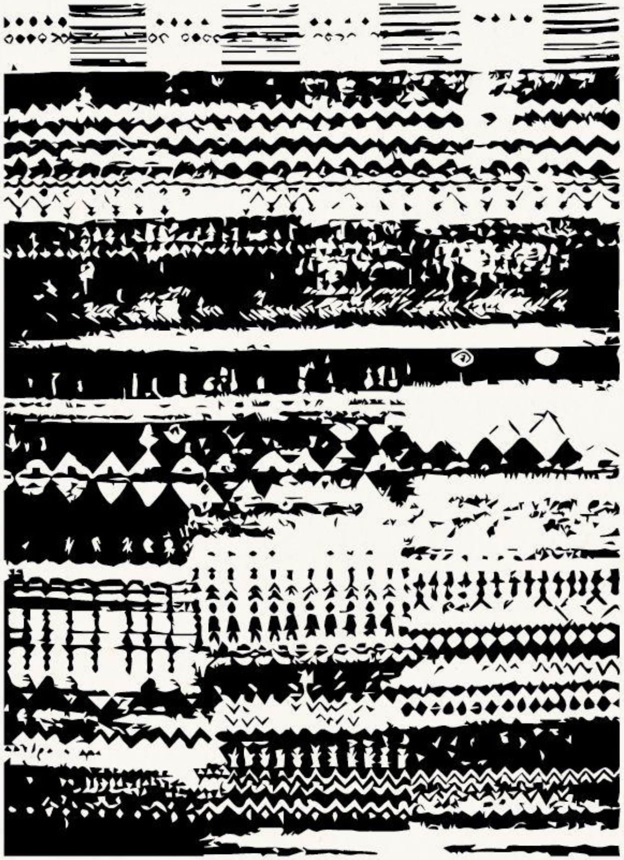

प्रोजेक्ट त्रुटि एक क्रांति थी क्योंकि इसने बुनकरों को मंच दिया। जिसके माध्यम से बुनकर अपनी रचनात्मकता को उजागर करने के लिए सक्षम हुए और इस पहल को "**मनचाहा**" के नाम से जाना गया, जिसका अर्थ है। दिल से महसूस किया गया अपनी मन की चाहत से बनाया गया। जयपुर रग्स ने मनचाहा को एक परियोजना के रूप में शुरु किया, जहां बुनकर कलाकारों में परिवर्तित हुए और गलीचों पर खुदके डिजाइन बनाने लगे।

चोकरी
द्वारा : सावित्री देवी

और इसलिए यह हुआ ...

मनचाहा डिजाइनरों में से **बुनकर बिमला देवी**, जिसने कभी अपने गांव से बाहर कदम नहीं रखा था। उन्होंने 2017 में फ्रैंकफ्रंट, जर्मनी के लिए उड़ान भरी। वह मंच पर गई और सभी को मंत्रमुग्ध करते हुए जर्मन डिज़ाइन अवार्ड प्राप्त किया।
जादुई मनचाहा, कमल...

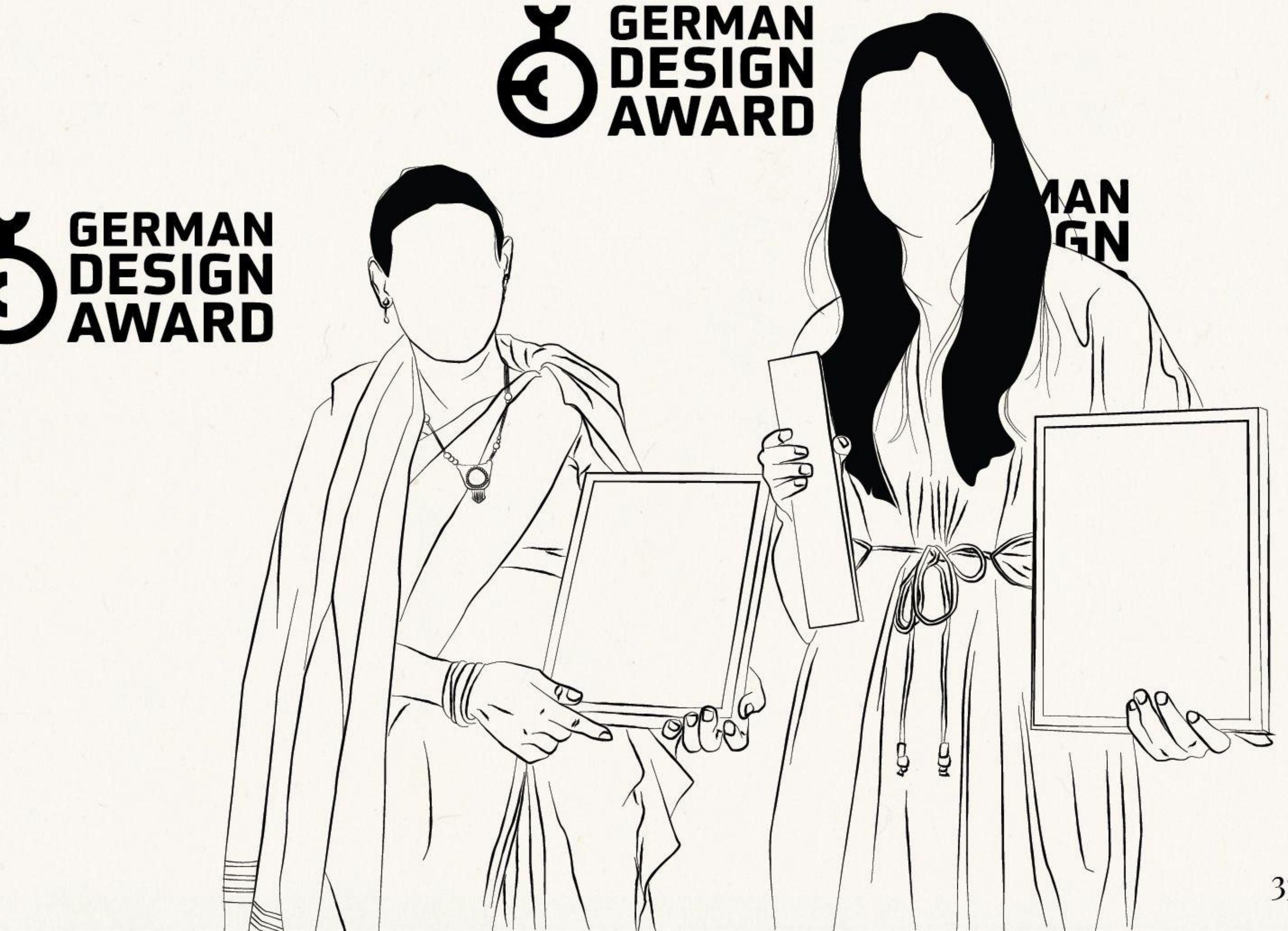

कारोबार वैश्विक हो रहा था। व्यवसाय विस्तृत हो रहा था लेकिन कुछ समस्या थी। नंद को पता नहीं था कि वह क्या थीं, लेकिन वह निश्चित रूप से जानते थे कि कुछ गड़बड़ है। जयपुर रग्स की पूरी तस्वीर धुंधली हो गई, जब सह-संयोग से नंद ने एक सम्मेलन में बैन एंड कंपनी के सलाहकारों से मुलाकात की, उन्होंने इस समस्या के मुद्दे को हल करने के लिए उनकी और जयपुर रग्स की मदद करने का फैसला किया।

वापसी अपनी मूल जड़ों की ओर....

नंद ने खुद से पूछा, “मैंने यह सब क्यों शुरू किया, मैं किस समस्या को हल कर रहा था?” उन्होंने समझा कि कंपनी अपना आधार, बुनकरों के मूल मूल्यों को खो रही थी। और फिर “अपने मूल जड़ों की ओर वापस जाने” की यात्रा शुरू हुई।

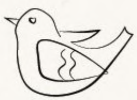

इस सफर में पहला कदम वीवर्स एंगेजमेंट प्रोग्राम के जरिये शुरू किया गया, जिसमें बुनकरों को प्रधान कार्यालय ले आया जाता है। उन्हें पूरे गलीचा बनाने की प्रक्रिया का अनावरण दिया जाता है। यह प्रक्रिया उन्हें अपने प्रयास के अंतिम फल को देखने कि अनुमति देता है। जिससे उन्हें अपने प्यार और श्रम से जुड़ने में मदद मिले। इस प्रक्रिया ने उन्हें एहसास दिलाया कि वे किसी बड़ी चीज का हिस्सा हैं।

साथ ही अपने मूल नियोग पर वापस जाते हुए, एक दूसरा कदम उठाया गया, जहां नंद ने पोस्टकार्ड प्रोजेक्ट के माध्यम से ग्राहकों और कारीगरों को जोड़ने का फैसला किया। इस तरह जयपुर रग्स परिवार ने पूर्ण दायरे को बनाये रखा।

बुनकरों ने ग्राहकों को पोस्टकार्ड लिखना शुरु कर दिया और जल्द ही ग्राहकों ने वापस उन्हें पोस्टकार्ड लिखना शुरु कर दिया।

पहल, भविष्य की ओर...

एक नई पहल को नंद और जयपुर रग्स के मूल मूल्यों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया, जिससे जयपुर रग्स को एक हिलिंग ऑर्गेनाइजेशन (संगठन) बनाया गया। नंद का मानना है कि कालीन हर हाथ को भर देता है, जिससे समग्रता का चक्र पूरा होता है।

नंद अक्सर कहते हैं, “हम कालीन नहीं बेचते, हम एक परिवार का आशीर्वाद साझा करते हैं।”

नंद का मानना हैं कि जयपुर रग्स की दुनिया में हर कारीगर एक कलाकार के रूप में विकसित होगा। एक ग्राहक, एक डिजाइनर और एक कारीगर सह-निर्माण की राह से में प्रवेश करते हुए, डिज़ाइन की दुनिया में एक दूसरे से जुड़ेंगे।

धन्यवाद्

यात्रा जारी है...